फरवरी 2026, मूल्य : 40

पूर्वी

सृजन की उड़ान

संपादक
अपूर्व

महाप्रबंधक
अमित कुमार

शब्द-संयोजन
उषा ठाकुर

आवरण चित्र : बंशीलाल परमार
रेखाचित्र : संदीप राशिनकर, शशिभूषण एवं मार्टिन जॉन

मूल्य :

प्रति	:	रु. 40.00
वार्षिक, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 1000.00
आजीवन, रजिस्टर्ड डाक सहित	:	रु. 10000.00

भुगतान इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी के नाम से किया जाए।
भुगतान ऑनलाइन या सीधे बैंक में भी जमा कर सकते हैं।
बैंक : UNION BANK
खाता संख्या : 520101255568785
IFSC : UBIN **0905011**
बैंक शाखा : जी-28, सेक्टर-18, नोएडा-201301
उत्तर प्रदेश

प्रकाशक

इंडिपेंडेंट मीडिया इनीशिएटिव सोसाइटी
बी-107, सेक्टर-63, नोएडा-201309
गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश
दूरभाष : 0120-4330755
editor@pakhi.in
pakhimagazine@gmail.com
www.facebook.comèpakhimagazine
Web portal : www.pakhi.in

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक और प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय।
स्वामित्व इंडिपेंडेंट मीडिया इनिशिएटिव सोसाइटी के लिए प्रकाशक, मुद्रक नारायण सिंह राणा द्वारा चार दिशाएं प्रिंटर्स प्रा.लि. जी-39, नोएडा से मुद्रित एवं बी-107, सेक्टर 63, नोएडा से प्रकाशित।

वर्ष : 18, अंक 5, फरवरी, 2026

यह चित्र कई अर्थों में पढ़ा जा सकता है। नीले खुले आसमान के नीचे एक खुरदुरा हाथ डंडे/लाठी को मजबूती से थामे हुए है, जो सीधे-सीधे मेहनत, श्रम और संघर्ष का प्रतीक बन जाता है। यह हाथ किसी किसान, मजदूर या आम आदमी का भी हो सकता है—जिसके लिए जीवन एक लंबी राह है और लाठी उसका सहारा। तस्वीर यह भी कहती है कि हालात चाहे जितने कठिन हों, यह पकड़ ढीली नहीं है, यानी टूटने के बजाय टिके रहने की जिद मौजूद है। वहीं आसमान की विशालता उम्मीद और संभावना का संदेश देती है कि संघर्ष के बीच भी कल का रास्ता खुला है। कुल मिलाकर, यह दृश्य श्रम की गरिमा, अनुभव की ताकत और जीवन की जद्दोजहद को एक सरल लेकिन गहरी भाषा में सामने रखता है।

अनुक्रमणिका

संपादकीय/अपूर्व

काल निरपेक्ष साहित्य के सृजक 4

चिट्ठी आई है 7

साक्षात्कार

आजकल बचे काम की तरह लिखता हूं : विनोद कुमार शुक्ल संग राकेश श्रीमाल की बातचीत 9

कहानियां

फसादों का सैलाब : धनेश दत्त पांडेय 13

इस नरक कुंड का अंत नहीं... : सैली बलजीत 19

सर्प मित्र : सुषमा मुनींद्र 27

आत्म-भक्षी : संजय कुमार सिंह 33

विस्तृत है आसमान तुम्हारा : नीरजा हेमेंद्र 39

कविताएं/ग़ज़लें

राजेंद्र उपाध्याय की कविताएं 44

पद्मराग मणि की कविताएं 46

रूपाली सिन्हा की कविताएं 47

मार्टिन जॉन की कविताएं 48

वेदप्रकाश की कविताएं 50

मूल्यांकन

किसी वाद से बंधा नहीं हूं; कवि हूं, अंधा नहीं हूं : प्रेम शशांक 51

गूंगे के गुड़-सा अनुभव करवाता उपन्यास : अश्विनी शांडिल्य 54

सुभाष-एमिली प्रेम और जवाहरलाल नेहरू की संवेदना : अनिल माहेश्वरी 56

स्त्री, लोक और सांस्कृतिक चेतना की कविताएं : कुमारी उर्वशी 58

शिक्षा से अर्जित विवेकपूर्ण मानस की पैरवी : प्रज्ञा 62

संस्मरण

एक विशेषांक की भ्रूण हत्या : कृष्ण बिहारी 67

आलेख

बागियों के गांव में मुस्कुराते हुए बुद्ध : अतुल कनक 72
हिंदी नवजागरण का विराट स्तंभ : राजेंद्र राजन 75
डिजिटल कंटेंट युग में साहित्य का कायांतरण : दीपक कोहली 79

स्थाई स्तंभ

कल्पित कथन

एक शोक गीत और अकादमी का पतन : कृष्ण कल्पित 81

सत्याग्रह

क्या यह बीजेपी में 'नबीन' दौर का आगाज है? : प्रियदर्शन 84

पाखी संवाद–जहां शब्द डरते नहीं

दूसरों के पाप गिनाने से... 86
प्रतिक्रियाएं 88

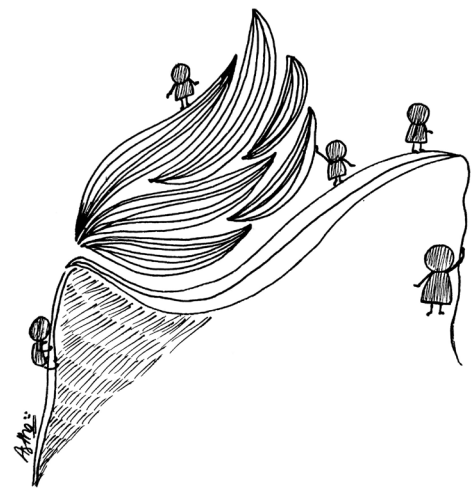

काल निरपेक्ष साहित्य के सृजक

वरिष्ठ कवि-कथाकार विनोद कुमार शुक्ल का निधन 24 दिसंबर, 2025 को हो गया। वे 88 वर्ष के थे। उनके निधन के साथ हिंदी साहित्य की वह आवाज शांत हो गई, जो कभी ऊंचे स्वर में नहीं बोली, कभी मंचीय आक्रोश का हिस्सा नहीं बनी, लेकिन जिसने भारतीय जीवन की सबसे गहरी और सबसे असुविधाजनक सच्चाइयों को अत्यंत संयत, शालीन और स्थाई भाषा में दर्ज किया। उनके जाने के बाद साहित्यिक जगत के साथ-साथ राजनीतिक सत्ता के उच्च स्तरों तक से शोक और श्रद्धांजलि के दृश्य सामने आए और इन्हीं दृश्यों के बीच कई पुराने सवाल भी फिर से उठ खड़े हुए।

विनोद कुमार शुक्ल को समझने की शुरुआत उनकी कविता 'यह टिफिन खाली है' से करना सबसे स्वाभाविक है। यह कविता आदिवासी जीवन, भूख और विकास के रिश्ते को बिना किसी नारे, बिना किसी आरोप और बिना किसी वैचारिक घोषणा-पत्र के सामने रख देती है। कविता में जंगल कटते हैं, सड़क बनती है, कारखाने की ओर रास्ता खुलता है, और उसी रास्ते के किनारे एक आदिवासी खड़ा है, हाथ में टिफिन लिए हुए। टिफिन रोज साथ है, लेकिन उसमें खाना नहीं है। यहीं कविता कहती है कि यह खाली टिफिन अब केवल खाली टिफिन नहीं रहा, यह बम बन चुका है। यह बम कोई हिंसक आह्वान नहीं है, बल्कि उस सामाजिक विस्फोट का रूपक है जो तब पैदा होता है जब भूख को लंबे समय तक अनदेखा किया जाता है। यह कविता 'पाखी' के शुक्ल जी पर एकाग्र अंक जो अक्टूबर, 2013 में प्रकाशित हुआ, में पहली बार प्रकाशित हुई थी। पढ़िए कविता–

"यह टिफिन खाली है
इसलिए यह टिफिन बम है
मैं खाली पेट इसे ले जा रहा हूं
इसे जंगल में कहीं
या जंगल काट कर बन रहे
कारखाने की तरफ
जाती सड़क के किनारे रख दूंगा
डरता हूं दूसरा भूखा
आदिवासी इसे छू न ले
यह न समझ ले
कि इसमें खाने को कुछ है
यह टिफिन खाली है
इसलिए यह टिफिन बम है
तभी जंगल के कोने में निकलते
छुपते एक आदिवासी की ओर देखा
उसको जानता हूं
वह खाली पेट है
अपने खाली टिफिन को
छुपाने जा रहा होगा
कि किसी भूखे की
नजर उस पर न पड़े
और उसे धोखा हो जाए
कि इसमें खाने को कुछ है
अभी मैं उससे पूछूं–कुछ खाने को है?
तो वह कहेगा–नहीं!! खाली है
यह टिफिन बम है
मैं आदिवासी को जानता हूं।"

इस कविता में न सरकार का नाम है, न किसी नीति का उल्लेख, न किसी सत्ता पर सीधा प्रहार। फिर भी यह कविता हर उस व्यवस्था को कठघरे में खड़ा कर देती है, जो विकास को सड़क और कारखाने तक सीमित मानती है और मनुष्य के पेट को गौण समझती है। यही विनोद कुमार शुक्ल का तरीका है। वे सीधे वार नहीं करते, वे स्थिति को इस तरह रख देते हैं कि सत्ता स्वयं दिखाई देने लगती है। उनका लेखन राजनीतिक है, लेकिन राजनीतिक भाषा से मुक्त है।

यही कारण है कि विनोद कुमार शुक्ल का साहित्य काल-निरपेक्ष है। वह किसी एक सरकार, किसी एक शासनकाल या किसी एक वैचारिक दौर तक सीमित नहीं है। आदिवासी का खाली टिफिन, नौकर की झुकी हुई पीठ, साधारण मनुष्य की छोटी-छोटी आकांक्षाएं, ये सब किसी एक समय की समस्याएं नहीं हैं। यही कारण है कि उनका लेखन आज भी उतना ही बेचैन करता है, जितना अपने समय में करता था।

उनकी भाषा को अक्सर 'सरल' कहा जाता है, लेकिन यह सरलता सतही नहीं है। उन्होंने उस तरह नहीं लिखा जिस तरह बोला जाता है, बल्कि उस तरह लिखा जिस तरह वे